वार्षिक प्रतिवेदन : 2020–21

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त एवं विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त इस महाविद्यालय का सम्पूर्ण सत्र सफलता एवं उपलब्धियों से भरा रहा। म.प्र. शासन के उच्च शिक्षा विभाग एवं विक्रम विश्वविद्यालय के दिशा निर्देश अनुसार सत्र 2020-21 हेतु प्रवेश प्रक्रिया सम्पन्न हुई। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में कक्षावार प्रवेश की स्थिति इस प्रकार है :-

New Admission

Class	2020-2021			
	I	II	III	Total
B.Com CA	40	48	72	160
B.Com. Plain	28	46	58	132
B.Com Tax	5	13	9	27
B.Com. Hons.	23	10	18	51
B.Sc. C.S.	15	23	33	71
B.Sc. C.S. Ex	2	-	-	2
B.Sc. M.B	5	23	17	45
B.Sc. Plain	0	2	10	12
BBA	31	28	20	79
M.Com.	16	10	-	26
M.Com. Ex	-	1	-	1
Total Vikram	**165**	**204**	**237**	**606**

परीक्षा परिणाम मई–जून 2019–20

कक्षा	पंजीकृत छात्र	उत्तीर्ण छात्र	प्रतिशत
VIKRAM UNIVERSITY			
B.Com I Year	115	115	100%
B.Com II Year	137	136	99.27%
B.Com III Year	104	103	99.04%
B.Com (Hons) I Year	10	10	100%
B.Com (Hons) II Year	18	18	100%
B.Sc.I Year	48	48	100%
B.Sc.II Year	62	62	100%
B.Sc.III Year	30	30	100%
BBA I Year	29	29	100%
BBA II Year	20	20	100%
BBA III Year	17	17	100%
M.Com II Sem	10	10	100%
M.Com IV Sem	19	19	100%

वाणिज्य विषय में महाविद्यालय को शोध-केन्द्र की मान्यता

विक्रम विश्वविद्यालय के द्वारा लोकमान्य टिळक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय को 'वाणिज्य विषय' में शोध केन्द्र की मान्यता प्रदान की गई। महाविद्यालय में आधारभूत सुविधाएं, समृद्ध पुस्तकालय, शोध पत्रिकाएँ, पुस्तकें शैक्षणिक एवं अक्षैणिक नियमानुसार शिक्षकों की नियुक्ति आदि के आधार पर मान्यता प्रदान की गई। निरीक्षण समिति के द्वारा दिनांक 29 दिसम्बर 2020 को निरीक्षण कर अनुशंसा शर्तों के अधीन कार्य परिषद की बैठक में दिनांक 22 जनवरी 2021 को वाणिज्य विषय में शोध केन्द्र को मान्य किया गया।

इसी अनुक्रम में महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापकों एवं प्राचार्य को शोध निदेशक के रूप में मान्य किया गया।

विषय	पद	नाम	शोधार्थी की संख्या
संस्कृत	प्राचार्य	डॉ.गोविन्द गन्धे	02
हिन्दी	सहायक प्राध्यापक	डॉ.अनीता अग्रवाल	04
वाणिज्य	सहायक प्राध्यापक	डॉ.अक्षिता तिवारी	03
वाणिज्य	सहायक प्राध्यापक	डॉ.केतकी त्रिवेदी	03
वाणिज्य	सहायक प्राध्यापक	डॉ.नितिशा तोषनीवाल	04
वाणिज्य	सहायक प्राध्यापक	डॉ. मीनल वनवट	03
वाणिज्य	सहायक प्राध्यापक	डॉ.स्मृति जैन	-

प्राचार्य एवं विद्यार्थियों का ऑनलाईन समागम

सत्र 2020-21 का प्रारंभ कोरोना काल होने के कारण नवीन विद्यार्थियों का महाविद्यालय में आगमन नहीं हो पाया। नवान्ग विद्यार्थियों से महाविद्यालय परिवार मिलने के लिए आतुर था, इस हेतु प्राचार्य महोदय ने एक ऑनलाईन मीटिंग आयोजित करने का सुझाव दिया। मीटिंग गुगलमीट पर आयोजित हुई, जिसमें महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ.केतकी त्रिवेदी ने प्राचार्य महोदय का परिचय देकर विद्यार्थियों को अवगत कराया। तत्पश्चात् प्राचार्य महोदय ने महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों का परिचय एवं उनके दायित्वों का सविस्तार वर्णन कर विद्यार्थियों की जिज्ञासा को शांत किया।

साथ ही महाविद्यालय में होने वाली समस्त गतिविधियों जैसे एन.सी.सी., एन.एस.एस., युवा उत्सव, राष्ट्रीय पर्व, खेल गतिविधियाँ, सांस्कृतिक गतिविधियों से छात्रों को अवगत कराया।

महाविद्यालय में वर्मी कम्पोस्ट, प्राकृतिक खाद, सौर ऊर्जा केन्द्र, नक्षत्र वाटिका भी है यह जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों के लिए सभी प्रकार की छात्रवृत्ति सुविधा, लायब्रेरी सुविधा, एक्सीलेन्स क्लब, करियर मार्गदर्शन, प्लेसमेंट सेल, अर्न एण्ड लर्न जैसे अनेकों सुविधाएं उपलब्ध है।

प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को आश्वस्त किया कि प्रत्येक शैक्षणिक समस्याओं के लिए महाविद्यालय परिवार आपके साथ है आप ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त करके भी उज्वल भविष्य की राह पर बढ़ सकते है।

प्रतिवेदन : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

हमारे जीवन में विज्ञान से होने वाले लाभों के प्रति समाज में जागरूकता लाने, वैज्ञानिक सोच विकसित एवं विज्ञान के क्षेत्र में नये प्रयोगों को लिए प्रेरित करने एवं इसके महत्व के उद्देश्य से लोकमान्य टिळक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 01.03.2021 स्टूडेंट सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर पीपीटी के माध्यम से अपने विषय को प्रस्तुत किया।

प्रस्तुति के दौरान बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष की छात्राओं कु.श्रेया देशमुख, कु.सृष्टि तिवारी, कु.यशस्वी अम्बुलकर ने वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट के विषय में बताया कि किस तरह वेस्ट वाटर को केमिकल एवं बायलॉजीकल ट्रीटमेंट के द्वारा प्यूरिफाई किया जा सकता है। तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों में अक्षय राज सिंह एवं हिमांशु शर्मा ने Quantitative aptitude and Bodmass Number System, Arithmetic, Algebra, Modern Maths की महत्व को हाईलाईट किया एवं बॉडमास में बेसिक सिद्धान्त को समझाया।

प्रियंका ने ऑक्सीजन is very important for life जैसा कि हम सभी जानते है O2 atm में किस तरह की रहे के महत्व को बताया।

प्रियांशी ने वर्मी कम्पोस्ट और केमिकल फर्टीलाईजर का कम्पोजिशन करते हुए बताया कि किस तरह वर्मी कम्पोस्ट ज्यादा अच्छा है। हर्षवर्धन ने रमन इफेक्ट की जानकारी दी। बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं - कु.पूजा एवं कु.अंशिका कुशवाह ने हारमोन्स के महत्व एवं फंक्शन्स को समझाया। कु.डिम्पल माली ने मलेरिया की विस्तृत जानकारी दी। हिमांशु ने ब्रेन की संरचना एवं कार्यो को बताने के पश्चात वैदिक गणित के सिद्धान्तों को समझाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ.गोविन्द गन्धे सर ने की एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ.अंजली शाह ने किया। विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए प्राचार्य महोदय ने कहा कि विज्ञान के विद्यार्थियों की सोच वैज्ञानिक होनी चाहिए एंव विज्ञान को प्रायोगिक रूप से उपयोग कर नित नये नवाचार एवं शोध करने चाहिए। सभी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन सम्बन्धित प्राध्यापकों डॉ.अंजली शाह, श्री चन्द्रशेखर शर्मा, डॉ.जया परिहार, श्रीमती सोनल गोधा, श्रीमती अनुराधा परमार ने किया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थिति रहे।

सूत्र संचालन कार्यशाला : दिनांक 20.03.2021

लोकमान्य टिळक शिक्षण समिति द्वारा एक अनूठा आयोजन लोकमान्य टिळक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में किया गया। संस्था में नियमित गतिविधियाँ एवं विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का क्रम सतत् चलता ही है और इन सभी कार्यक्रमों में संचालन का कार्य भी होता ही है, परंतु संचालन से जुड़ी सूक्ष्मताओं पर आधारित कार्यशाला प्रायः देखने को नहीं मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उपरोक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में श्री जीवन प्रकाश आर्य जी (सेवानिवृत्त प्राध्यापक-इतिहास) एवं डॉ.सुरेन्द्र मीणाजी (प्रबंधकीय अधिकारी-ग्रेसिम, नागदा) उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गिरीशजी भालेराव (कार्यपालन अधिकारी लो.टि.सां.न्यास एवं शिक्षण समिति) द्वारा की गई। इस अवसर पर लोकमान्य टिळक इकाईयां के प्राचार्य डॉ.गोविन्द गन्धे, श्रीमती वसुधा केसकर, श्रीमती शुभा मराठे, श्री ज्ञानेन्द्र शर्मा एवं सभी इकाईयों के शिक्षक साथी उपस्थित थे। कार्यशाला का उद्घाटन दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। अतिथियों का शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया। अतिथि परिचय डॉ.नितिशा तोषनीवाल ने दिया। कार्यक्रम की शुरूआत में अथवा कार्यक्रम रूपरेखा श्री गिरीश भालेराव जी ने रखी। आपने इस कार्यक्रम की उपयोगिता तथा इसकी परिकल्पना की जानकारी दी।

प्रथम सत्र

वक्ता : श्री जीवन प्रकाश आर्य

अपने उद्बोधन में अत्यंत सारगर्भित प्रभावशाली शब्दावली तथा उदाहरणों से विषय का प्रतिपादन किया। संचालन से जुडे निम्नलिखित बिंदुओं को प्रमुखता से प्रस्तुत किया :-

1. संचालन एवं संयोजन अलग-अलग कार्य है। संयोजन कार्यक्रम पूर्व शुरू हो जाता है जिसमें अतिथि चयन, आवास व्यवस्थाएं, मंच तथा उपयोगी सामग्री व्यवस्थाएँ आदि सम्मिलित है।

2. दीप प्रज्ज्वलन के लिए उपयोग में आने वाली सामग्री उचित स्थान पर होनी चाहिए।

3. सरस्वती पूजन एवं माल्यार्पण की व्यवस्था उचित हो।

4. औपचारिक शुरूआत के समय तथा अतिथियों के मंच पर आने के पूर्व कार्यक्रम का स्वरूप एवं कार्यक्रम के आयोजक की जानकारी देना। संचालन सुनिश्चित करें कि मंच पर ही अतिथियों के लिए कार्यक्रम की रूपरेखा या क्रम तथा वक्तव्य की अवधि की जानकारी उपलब्ध हो।

5. दीप प्रज्ज्वलन के समय संचालक की वाणी शांत न हो, अर्थात इस समय दीपों की रोशनी या प्रकाश के महत्व पर श्लोक, गीत अथवा लोकाक्तियाँ आदि का उच्चारण किया जाना चाहिए।

6. संचालन की विधा पर संचालन प्रक्रिया निर्भर करती है। राजनीतिक, सामाजिक या त्यौहारों के अवसरों पर संचालन प्रक्रिया या समायोजन भी बदल जाता है। उदाहरण यदि कोई कार्यक्रम सांस्कृतिक स्तर का हो तो सरस्वती वंदना नृत्य के माध्यम से भी की जा सकती है।

7. अतिथि परिचय में अतिश्योक्ति ना हो तथा उसमें संक्षिप्तता तथा सटीकता हो। अतिथि परिचय वास्तविक उद्बोधन से लंबा नहीं होना चाहिए।

8. अतिथि उद्बोधन या वक्तव्य के पूर्व बीज वक्तव्य अवश्य होना चाहिए, जिससे वक्ता को अपने विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण की दिशा प्राप्त होती है। इसके माध्यम से श्रोताओं को भी विषय की जानकारी प्राप्त होती है।

9. मुख्य वक्ता के उद्बोधन के पूर्व एकल गीत की प्रस्तुति की जाना चाहिए। गीत का चयन कार्यक्रम के विषय के अनुरूप हो अर्थात छदम रूप में कार्यक्रम से जुडा हो। इसके पश्चात मुख्य वक्ता को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

10. संचालक का शब्द कोष समृद्ध होना चाहिए। शब्दों का चमत्कारिक प्रभाव होता है। शब्दों का अर्थ वही संप्रेषित होना चाहिये, जो हम संप्रेषित करना चाहते है। इस बात की सावधानी रखना चाहिए कि बहुअर्थी शब्दों का प्रयोग ना हो तथा शब्द स्पष्ट एवं सरल हो।

11. आभार प्रदर्शन कार्यक्रम की पृष्ठभूमि के आधार पर तय किया जा सकता है। आभार 2-3 मिनिट से ज्यादा लंबा नही होना चाहिए। आभार के माध्यम से आयोजक अपने मन की कृतज्ञता वक्ता के हृदय तक पहुँचाये। आभार एक व्यक्ति नहीं अपितु समग्र सभा या सदन की समूह वाणी बन जाए।

12. कार्यक्रम के अंत में स्वस्ति मंत्र, कल्याण मंत्र अथवा राष्ट्रगान के प्रस्तुतीकरण के द्वारा कार्यक्रम का समापन किया जाना चाहिए।

प्रथम सत्र :

द्वितीय वक्ता : डॉ. सुरेन्द्र मीणा

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में द्वितीय वक्ता श्री सुरेन्द्र मीणा ने संचालन प्रक्रिया एवं संचालक की मनोदशा पर अपने विचार रखे। डॉ.मीणा ने उपरोक्त विषय की जटिलताओं को बड़े ही सहज, सरल एवं मनोरंजक रूप में प्रस्तुत किया। आपके वक्तव्य के मुख्य बिंदु इस प्रकार है :-

1. संचालक को उसकी योग्यता के आधार पर ही संचालन का दायित्व मिलता है। उसे यही बात ध्यान में रखकर अपना कार्य करना चाहिए।

2. संचालक के समक्ष उपस्थित श्रोता उसकी गलतियाँ ढूंढने की कोशिश करते हैं परंतु एक सफल संचालक का यही प्रयास रहना चाहिए कि अपने आत्मविश्वास एवं योग्यता से उन्हें असफल या झूठा साबित कर दें।

3. छोटी सोच नियत में खोट और पैर में मोच व्यक्ति को आगे नहीं बढ़ने देती है। आज का दिन कभी वापस नहीं आएगा। संचालक को आज अपना श्रेष्ठतम देने का प्रयास करना चाहिए।

4. संचालक के पास वैचारिक सक्षमता तथा समृद्ध विचार की अभिव्यक्ति का गुण होना चाहिए। अच्छे विचार, कविताएं, पंक्तियाँ लिपिबद्ध हो।

5. संचालक के पास पर्याप्त मात्रा में लेखन सामग्री, पेपर, पेन, पेंसिल इत्यादि अवश्य होना चाहिए। संचालन प्रक्रिया में ध्वनि तथा माईक व्यवस्था में आने वाली बाधाओं या व्यवधान पर भी संचालक पूर्व में ही अवलोकन कर लें।

6. सदैव अपना मोबाईल एरोप्लेन मोड में रखे जिससे की कार्यक्रम संचालन की अवधि में क्रमभंग या अवरोध उत्पन्न ना हो।

7. संचालन अपने कर्म या कार्य को प्रधानता दे जो कि जीवन का सूत्र भी है, भाग्य के भरोसे ना रहो।

8. द्रोणाचार्य एवं एकलव्य के उदाहरण से हम समर्पण, लगन, जुनून जैसे गुणों को अंगीकार कर सकते है।

9. संचालक के ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होना चाहिए। जिससे वह अपने कार्य का स्वरूप वक्त के अनुरूप बदल सके।

अंत में आपने कुछ सूत्र पंक्तियाँ बताई जिनका प्रयोग संचालन के समय किया जा सकता है।

- वक्त के साथ बदलना है हमें अपना मिजाज
अगर हम नहीं बदले तो हालात बदल जाएंगे।
- हालात से सहमे हुए लोगों इतना समझ लीजिए,
हालात गुजर जाया करते हैं, ठहरा नही करते।
- पथ क्या पथिक की कुशलता क्या यदि पथ में बिखरे शूल ना हो,
और नाविक की धैर्य कुशलता क्या जब धाराएं प्रतिकूल ना हो।
- कदम बढ़ाओं साथी फिक्र मंजिल की ना करो
और मंजिल तो एक पढ़ाव है इसे पा कर आहें ना भरो।
- दीप बन जलते रहो, फूल बन खिलते रहो,
स्वमंगल के लिए चलते रहो, चलते रहो

द्वितीय सत्र :

वक्ता : डॉ.गोविन्द गन्धे

सूत्र संचालन कार्यशाला के द्वितीय एवं अंतिम सत्र में लोकमान्य टिळक विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.गोविन्द गन्धे ने संचालन प्रक्रिया से जुडी पेचीदगियों से अवगत कराया। आपने संचालन में आने वाली व्यावहारिक त्रुटियों और उनके उचित समाधान पर प्रकाश डाला। अपने उद्‌बोधन में आपने जिन बिन्दुओं को रेखांकित किया वे निम्नानुसार है :-

1. किसी भी कार्य की पुनरावृत्ति लाभदायक होती है। यह प्रक्रिया किसी भी कार्य को सीखने के लिए आवश्यक

होती है। इस तरह की कार्यशाला का आयोजन तभी सार्थक होगा जब हम कार्यशाला में प्रतिपादित विषय को आत्मसात कर सकें।

2. कार्यक्रम का स्वरूप एवं संस्था की प्रकृति के अनुरूप ही संचालन तैयार किया जाना चाहिए क्योंकि संचालन भी संस्था की प्रकृति की परिचायक होता है।

3. कथन की शैलियाँ दो प्रकार की होती है -

व्यास शैली – इसमें किसी भी बात को विस्तार पूर्वक समझाया जाता है।

सूत्र रूप – इसमें बात को संक्षेप में सूत्र रूप मे कहा जाता है।

सूत्र दिये जा सकते है, पर उसे समझ कर स्वविवेक से कार्य हमें स्वयं करना चाहिए।

4. संचालन के समय बोलने का मोह त्याग कर स्वयं पर नियंत्रण रख कर बोलना चाहिए। कहाँ क्या और कितना बोलना है इस पर नियंत्रण होना आवश्यक है। मंच से बोलते समय आवाज में बदलाव करना अपने कथन को प्रभावशाली बना सकता है।

5. संचालन प्रक्रिया तटस्थता से होनी चाहिए तथा निरपेक्ष होकर करना चाहिए। अतिथि उद्बोधन पर टिका टिप्पणी नहीं होना चाहिए। अच्छा संचालक अच्छा श्रोता होना चाहिए तथा उसे कृत्रिम या आयातित शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

6. संचालन से जुड़ी अवधारणा है कि भाषा का शिक्षक ही संचालक का कार्य कुशलता से करता है परंतु यह केवल एक भ्रांति मात्र है। आवश्यक यह है कि किसी भी विषय का शिक्षक संचालन करें। उसके भाषा या शब्दों का उच्चारण शुद्ध हो एवं वाक्य संरचना में त्रुटियां ना हो। प्रभावशाली संप्रेषण का भी यही सिद्धान्त है।

7. संचालन प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। यह हमें परिपूर्णता की ओर ले जाती है। शिक्षकों का तो कार्य ही सतत् विचारों की अभिव्यक्ति करना होता है। इसलिए उनकी जिम्मेदारी ज्यादा बनती है।

8. संचालक का प्रयास होना चाहिए कि संपूर्ण संचालन लिपिबद्ध ना हो अपितु वाक्य संरचना मस्तिष्क में स्पष्ट हो। छोटे वाक्यों का प्रयोग करना उचित होगा। अपनी बात को संक्षिप्त रूप में रखने का प्रयास होना चाहिए।

9. किसी भी कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त करना केवल एवं औपचारिकता मात्र नहीं होना चाहिए। आभार हृदय से ज्ञापित हो ना की प्रदर्शित हो। यह अपनी कृतज्ञता सभी सम्मानीय अतिथियों के प्रति व्यक्त करने का माध्यम है।

10. अतिथि परिचय में सम्मान एवं आत्मीयता का भाव होना चाहिए तथा उसमें वस्तुनिष्ठता होना सही होगा।

11. संचालक का यह भी दायित्व है कि कार्यक्रम के पूर्व अतिथि या वक्ताओं से संपर्क करके उनकी आवश्यकताओं जैसे पावर पाईंट, ब्लेक बोर्ड या और कोई साधन की कार्यक्रम के समय उपलब्धता सुनिशिचित कर लें।

12. संचालक के लिए यह भी आवश्यक है कि कार्यक्रम में फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी आदि कार्यो के लिये उचित स्थान निर्धारित तथा संयोजन पूर्व में ही सुनिश्चित कर लिया जाए जिससे की चलते कार्यक्रम में व्यवधान उत्पन्न ना हो।

13. प्रायः देखा जाता है कि संचालन कार्य हेतु संचालक अपने ड्रेसकोड में बदलाव करता है जो कि आवश्यक नहीं है। सामान्य दिनों की तरह ही संचालन के समय भी वेशभूषा हो। आप अपनी संस्था का प्रतिनिधित्व कर रहे है ना कि स्वयं का। यहाँ आपकी भाषा या प्रस्तुति का महत्व है ना कि परिधानों का।

14. एक सफल संचालक अपनी गलतियों से सीख लेकर आगे की ओर बढ़ता है

आदरणीय डॉ.गन्धे ने यह भी बताया कि भविष्य में किस प्रकार इस सूत्र संचालन कार्यशाला का व्यावहारिक कार्यान्वयन होगा तथा शिक्षकों को अपना आंकलन या आत्म निरीक्षण करने का अवसर मिलेगा।

सूत्र संचालन कार्यशाला का समापन शांतिपाठ से हुआ तथा आभार डॉ.अक्षिता तिवारी ने ज्ञापित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन डॉ.केतकी त्रिवेदी ने किया।

सूत्र संचालन कार्यशाला
दिनांक : 20/03/2021

शिशु मंदिर पानदरीबा	हस्ताक्षर	लोकमान्य टिळक सी.बी.एस.ई.	हस्ताक्षर
1. श्रीमती रचना जोशी		19. श्री मुकेश उमठ	
2. श्रीमती सोनाली पंवार		20. श्री समीर सावंत	
3. श्रीमती कविता पांचाल		21. श्रीमती रचना सुगंधी	
4. श्रीमती वंदना फणनीश		22. शाहिदा खान	
5. कु.रीनू आनंद		23. श्रीमती रेणुका पांचाल	
6. श्रीमती कीर्ति व्यास		24. डॉ. रेखा भालेराव	
		25. श्री अरविन्द खोत	
माध्यमिक विद्यालय, नीलगंगा		26. श्रीमती मीनाक्षी अग्रवाल	
7. सौ.कीर्ति चौरसिया		27. श्री राजश्री खोपकर	
8. विद्या बेडेकर		28. श्री रंजना श्रीवास्तव	
9. मालती जोशी		29. श्री स्वाति शर्मा	
10. सौ.ज्योति चौरे			
11. सौ.शीतल पोद्दार		वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय	
12. सौ.हर्षा तेलंग		30. डॉ.केतकी त्रिवेदी	
		31. डॉ.नितिषा तोषनीवाल	
विद्या विहार उ.मा.विद्यालय		32. श्री अमित जैन	
13. डॉ.अमित पंडित		33. डॉ.अंजली शाह	
14. श्रीमती दीपाली नागर		34. डॉ.अक्षिता तिवारी	
15. डॉ.सरोज यादव			
16. श्रीमती कल्पना पंवार		शिक्षा महाविद्यालय	
17. श्री यशवंत तोमर		35. सुनीता गीते	
18. कु.श्वेता गोस्वामी		36. श्रीमती ज्योति विजयवर्गीय	
		37. सुश्री माधवी सगरे भागवत	

'उपभोक्ता प्रशिक्षण और डिजिटल भुगतान जागरूकता' पर वेबिनार

राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केन्द्र, मुम्बई तथा महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 08/06/2021 को एक वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार का विषय ''उपभोक्ता प्रशिक्षण और डिजिटल भुगतान जागरूकता'' था। वेबिनार के मुख्य वक्ता थे। डॉ. अमित जोशी, सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय इन्दौर।

डॉ.अमित जोशी ने विद्यार्थियों को डिजिटल भुगतान से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक भुगतान करने के विभिन्न माध्यमों से अवगत कराया। इसके अंतर्गत इंटरनेट बैकिंग, यूपीआई, डेबिक कार्ड, क्रेडिट कार्ड इत्यादि उपयोग करने के लाभों और जोखिमों के बारे मे जानकारी दी। साथ ही डिजिटल भुगतान करते समय ध्यान रखने वाली सावधानियों को भी समझाया, जिससे धोखाधड़ी तथा साईबर अपराध से बचा जा सके। उद्बोधन के अंत में डॉ. अमित जोशी ने छात्रों की शंकाओं का समाधान किया।

वेबिनार में 40 से अधिक छात्र-छात्राओं ने सहभागिता की। महाविद्यालय के प्राध्यापक भी वेबिनार में सम्मिलित हुए। वेबिनार का संचालन डॉ.केतकी त्रिवेदी ने किया।

एन.सी.सी. प्रतिवेदन 2020-2021

सत्र 2020-2021 में महाविद्यालय एन.सी.सी. इकाई में 36 छात्र एवं 17 छात्राओं सहित 53 का प्लाटून रहा। प्राकृतिक आपदा कोरोना के बीच एन.सी.सी. के छात्र सैनिकों की चयन प्रक्रिया पूर्ण हुई। सब कुछ ऑनलाईन के माध्यम से संभव हो रहा है। इसी क्रिया में 21 जून योग दिवस को भी ऑनलाईन लिंक के माध्यम से जोड़ा गया और सभी विद्यार्थियों ने सहभागिता कर भारत सरकार द्वारा निर्धारित समय पर योग किया।

भारत सरकार द्वारा फिट इंडिया कैपेंन के दौरान विद्यार्थियों द्वारा लॉकडाउन में घर से समाज में स्वस्थ रहने के संदेश, विडिया, फोटो बनाकर भेजे गए। इसी बीच माननीय प्रधानमंत्री जी की वोकल फॉर लोकल का प्रचार प्रसार का दायित्व भी विद्यार्थियों को दिया गया जिसको उन्होंने पूर्ण किया।

पहली नेशनल वेब वर्कशॉप जो कि सेल्फ डिफेंस पर थी का 28 जून को आयोजन इन्दौर ग्रुप द्वारा किया गया। 16 जुलाई को घर पर ऑनलाईन लिंक के माध्यम से पौधारोपण सभी विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

20 जुलाई का एक दिवसीय वेबीनार ''हमारा राष्ट्रीय ध्वज एवं उसका सम्मान'' का आयोजन भोपाल ग्रुप द्वारा किया गया। 10 अगस्त से एन.सी.सी.के विद्यार्थियों की ऑनलाईन क्लास प्रारंभ हुई। जिसमें उन्हें एन.सी.सी.परीक्षा तथा प्रेक्टिकल परीक्षा का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पढ़ाया गया पूरे सत्र में 45 ऑनलाईन क्लास हुई।

'' आत्मनिर्भर भारत अभियान '' जागरूकता कार्यक्रम कार्यशाला (वेबीनार) 23 जुलाई को उज्जैन ग्रुप द्वारा किया गया जिसमें महाविद्यालय एन.सी.सी. इकाई के छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

27 जुलाई को हेल्थ एण्ड हैप्पीनेस पर वेबीनार का आयोजन 10 एम.पी., बी.एन. एन.सी.सी. द्वारा किया गया जिसमें महाविद्यालय की छात्रा लीना भावसार ने अपना मत रखा।

28 जुलाई SSB, Super Tips for Joining Army, Navy, Airforce के वेबीनार का आयोजन ए.डी.जी. भोपाल द्वारा किया गया।

24.11.2020 को एन.सी.सी.दिवस पर महाविद्यालय के 11 छात्रों ने शा.सिविल अस्पताल उज्जैन में रक्त दान किया।

9 दिसम्बर को संविधान दिवस के अन्तर्गत शपथ, चित्रकला, विडियों, चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय की छात्रा लीना भावसार (प्रथम), अदिती बैसारे (द्वितीय) स्थान पर रही।

14 दिसम्बर को ऊर्जा संरक्षण दिवस पर सायकल रैली माननीय कुलपति अखिलेश कुमार पाण्डे सर के साथ विक्रम विश्वविद्यालय से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्गो से पुनः विश्वविद्यालय पहुंची। भौतिकी अध्ययनशाला द्वारा आयोजित इस रैली में एन.सी.सी. इकाई के छात्रों ने सहभागिता की।

वर्ष भर ऑनलाईन के माध्यम से 'स्वच्छता दिवस', 'बेटी पढ़ाओं बेटी बचाओ ', कोविड-19 के प्रति जागरूकता अभियान चलाए जाए।

16 दिसम्बर 2020 को 'विजय दिवस ' 10 एम.पी. बी.एन. एन.सी.सी.के कमाण्डर कर्नल अरूणाभाकुंडु सर के व्याख्यान एवं ऑनलाईन संगोष्ठी के माध्यम से बनाया गया।

एन.सी.सी. बी एवं सी सर्टिफिकेट की परीक्षा के लिए 8, 9, 10, 22 एवं 26 फरवरी को छोटे छोटे समूह में केम्प का आयोजन 10 एम.पी. बी.एन. एन.सी.सी.पर हुआ जो कि सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक रहा, जिसमें एन.सी.सी.केडेट को परीक्षा सामग्री, हथियारों की जानकारी प्रदान की गई।

इस वर्ष एन.सी.सी.इकाई के 25 कैडेट 'सी ' सर्टिफिकेट परीक्षा में एवं 13 कैडेट 'बी' सर्टिफिकेट परीक्षा में सम्मिलित हुई जिनकी लिखित परीक्षा 9 अप्रैल एवं 10 अप्रैल को कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए सम्पन्न हुई सभी को अच्छे परिणाम की शुभकामनाएं । इस प्राकृतिक आपदा में एन.सी.सी. इकाई के छात्रों ने समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए वार्षिक गतिविधियों में सहभागिता की। आप सभी को महाविद्यालय परिवार द्वारा उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

लेफ्टीनेंट चन्द्रशेखर शर्मा
एन.सी.सी.अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना : प्रतिवेदन 2020-2021

पिछले वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान नियमों का पालन करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ सम्पन्न हुई।

माह सितम्बर-अक्टूबर में गूगल फार्म भरवाकर छात्रों का पंजीयन स्वयं सेवक के रूप में किया गया।

प्रतिवर्षानुसार राष्ट्रीय सेवा योजना की समिति का गठन किया गया। जिला संगठक राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. प्रदीप लाखरे द्वारा महाविद्यालय की इकाई का निरीक्षण किया गया। डॉ.लाखरे ने छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन एवं आत्मनिर्भर बनने के साथ लीडर बनने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम समन्वय डॉ.प्रशांत पौराणिक द्वारा गूगल मीट पर दिनांक 28.10.2021 को स्वयं सेवकों एवं कार्यक्रम अधिकारियों को जोड़ा गया। जिसमें कोरोना काल में सतर्कता के साथ समाज में कोरोना के प्रति जागरूकता कैसे फैलाई जाये यह बताया गया। भ्रष्टाचार के विरूद्ध लडाई के लिए शपथ दिलाई गई।

29 अक्टूबर को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत महाविद्यालय में सतर्कता जागरूकता शपथ ऑनलाईन दिलाई गई।

राष्ट्रीय कला दिवस पर 31 अक्टूबर को महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं समस्त प्राध्यापकों ने भारत की एकता एवं अखंडता के लिये शपथ ली।

राष्ट्रीय सेवा एकता योजना विश्वविद्यालय स्तरीय अभिमुखी करण कार्यक्रम में गूगलमीट के माध्यम से स्वयं सेवकों ने भागीदारी की । जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों की जानकारी दी गई।

26 नवंबर को संविधान दिवस पर स्वयं सेवकों एवं कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शपथ ली गई।

1 दिसंबर को एड्स दिवस के उपलक्ष्य में निबंध, स्लोगन, पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। म.प्र. एड्स नियंत्रण समिति के निर्देशानुसार एड्स दिवस के अवसर पर विश्व विद्यालय द्वारा राष्ट्रीय वेबीनार आयोजित किया गया। लोगों को जागरूक करने के लिए डिजिटल माध्यम का प्रयोग किया गया। स्वयं सेवकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र की टीकाकरण टीम को सहयोग प्रदान किया गया।

दिनांक 04.02.2021 को कैंसर दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय 'कैंसर के कारण एवं उनसे बचाव' था।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के उपलक्ष्य में पोस्टर स्लोगन और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विषय 'भारतीय महिलाओं का समाज में योगदान' रखा गया। इस प्रतियोगिता में सावित्रीबाई फूले, अहिल्या बाई होल्कर, रानी लक्ष्मीबाई, कल्पना चावला, एनी बेसेंट आदि महान महिलाओं पर प्रतिभागियों ने रचनाएं बनाई।

कोरोना महामारी के कारण महाविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष प्रशिक्षण शिविर रद्द किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 16 मार्च को राष्ट्रीय सेवा योजना और एन.सी.सी. इकाई द्वारा प्रातः 8 बजे कालिदास कन्या महाविद्यालय, देवास गेट से शहीद पार्क तक साईकिल रैली का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के समस्त स्टॉफ तथा विद्यार्थियों सहभागिता की।

आजादी की 75 वी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में निबंध प्रतियोगिता 18 मार्च को आयोजित की गई जिसका विषय 'महात्मा गांधी एवं दांडी यात्रा' था। इसमें महाविद्यालय के 20 छात्र-छात्राओं ने कोरोना के नियमों का पालन करते हुए भाग लिया।

स्वयं सेवकों ने अपने आसपास के नागरिकों को टीका लगवाने हेतु प्रेरित किया।